موضوع الخطبة : الناقض الثامن: مظاهرة الكفار على المسلمين

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :فيض الرحمن التيمي(@Ghiras_4T)

शीर्षक:

आठवां भंजक:

(मुसलमानों के विरुद्ध काफिरों की सहायता करना)

مظاهرة الكفار على المسلمين

प्रथम उपदेश:

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وسَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إله إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُواْ اتَّقُواْ اللّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ وَأَنتُم مُّسْلِمُون.

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُواْ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالاً كَثِيراً وَنِسَاء وَاتَّقُواْ اللّهَ الَّذِي تَسَاءلُونَ بِهِ وَالأَرْحَامَ إِنَّ اللّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبا.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلاً سَدِيداً * يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَن يُطِعْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزاً عَظِيما.

प्रशंसाओं के पश्चात!

स्र्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है,और सर्वोत्तम मार्ग मोंहम्मद सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीज़ (धर्म) अविष्कार की गई बिदअ़तें (नवाचार) हैं,धर्म में अविष्कार की गई प्रत्येक चीज़ बिदअ़त (नवाचार) है,प्रत्येक बिदअ़त (नवाचार) गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाजी है।

अल्लाह पर ईमान लाने से मोमिनों से मित्रता रखना अनिवार्य है

अल्लाह के बंदो!अल्लाह तआ़ला तक़्वा (धर्मनिष्ठा) अपनाओ और उसका भय स्वेद अपने हृदय में जीवित रखो,उसका आज्ञा पालन करो और उसकी अवज्ञा से बचो,और जान लो कि अल्लाह पर ईमान लाने से मोमिनों से मित्रता रखना भी अनिवार्य हो

जाता है,अर्थात उनसे प्रेम करना और उन की सहायता करना,अल्लाह का कथन है:

(وَالْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ **بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ** يَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنكَرِ وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَيُطِيعُونَ اللَّهَ وَرَسُولَه أولَئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيم).

अर्थात:तथा ईमान वाले पुरूष और स्त्रियाँ एक-दूसर के सहायक हैं वे भलाई का आदेश देते तथा बुराई से रोकते हैं,और नमाज़ की स्थापना करते तथा ज़कात देते हैं,और अल्लाह तथा उस के रसूल की आज्ञा का पालन करते हैं,इन्हीं पर अल्लाह दया करेगा,वास्तव में अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

अल्लाह पर ईमान लाने से कुफ्र और काफिरों से घृणा रखना अनिवार्य हो जाता है और यह स्पष्टता कि काफिरों से निष्ठा एवं मित्रता के क्या अर्थ हैं

मोमिनों के समूह!अल्लाह पर ईमान लाने से कुफ्र एवं काफिरों से घृणा एवं शत्रुता रखना और उन से स्वंय को मुक्त करना भी अनिवार्य होता है,क्योंकि सत्य मोमिन वह है जो अल्लाह और रसूल के प्रेमियों से प्रेम रखता है,और जिस से अल्लाह एवं

रसूल घृणा रखते हैं,उस से वह भी घृणा रखता है,इसका विपरीत काफिरों से मित्रता रखना है,अर्थात दुनयावी हितों एवं उद्देश्यों के कारण उन से प्रेम रखी जाए,यह अवहेलना एवं अवज्ञा है,बल्कि बड़े पापों में से है,अल्लाह तआ़ला ने काफिरों से मित्रता रखने से क़ुर्आन पाक में अनेक आयतों में मना किया है,उदारण स्वरूप अल्लाह का फरमान है:

(لا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُونَ الْكَافِرِينَ **أَوْلِيَاءَ مِن دُونِ الْمُؤْمِنِينَ** وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ فَلَيْسَ مِنَ اللَّهِ فِي شَيْءٍ).

अर्थात:मुमिनों को चाहिये कि वे ईमान वालों के विरुद्ध काफिरों को अपना सहायकमित्र न बनायें और जो ऐसा करेगा उस का अल्लाह से कोई संबंध नहीं।

तथा अल्लाह ने अधिक फरमाया:

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا **لَا تَتَّخِذُوا عَدُوِّي وَعَدُوَّكُمْ أَوْلِيَاءَ** تُلْقُونَ إِلَيْهِم بِالْمَوَدَّةِ وَقَدْ **كَفَرُوا** بِمَا جَاءَكُم مِّنَ الْحَقِّ).

अर्थात:हे लोगो जो ईमान लाये हो!मेरे शत्रुओं तथा अपने शत्रुओं को मित्र न बनाओ।तुम संदेश भेजते हो उन की ओर मैत्री

का,जब कि उन्हों ने कुफ्र किया है उस का जो तुम्हारे पास सत्य आया है।

काफिरों से मित्रता रखने का अर्थ और उस का हुकुम

अल्लाह के बंदो!काफिरों से मित्रता रखना रखना उनसे संबंध रखने से कहीं बड़ा पाप है,काफिरों से मित्रता का मतलब है कि मुलिमानों के विरुद्ध उन की सहायता की जाए,वह इस प्रकार से कि यदि मुसलमानों एवं काफिरों के बीच युद्ध हो तो काफिरों की पंक्ति में खड़ा हो कर हथियार,धन-दौलत,राय व मशवरा और योजना के द्वारा उन की सहायता करे,उस के पीछे उद्देश्य यह हो कि काफिरों का धर्म इस्लाम पर प्रभुत्व हो जाए,ऐसा करना इस्लाम भंजक है,अल्लाह का शरण,इसका प्रमाण अल्लाह का यह कथन है:

ومن يتولهم منكم **فإنه منهم** إن الله لا يهدى القوم الظالمين.

अर्थात:और जो कोई तुम में से उन को मित्र बनायेगा वह उन्हीं में होगा तथा अल्लाह अत्याचारों को सीधी राह नहीं दिखाता।

काफिरों से मित्रता इस लिए कुफ्र है कि इस से इस्लाम एवं मुसलमानों से घृणा एवं शत्रुता अनिवार्य हो जाता है,जो कि कुफ्र है,क्योंकि अल्लाह ने स्वयं से,अपने रसूल से,अपने धर्म से और मुसलमानों से प्रेम करने का आदेश दिया है,रही बात मुसलमानों के विरुद्ध काफिरों की सहायता करने की तो इस से उपरोक्त समस्त मामलों (प्रेम के आदेशों) का विरुद्ध होता है,अल्लाह तआ़ला हमें इस से सुरक्षित रखे।

शनक़ीती रह़िमहुल्लाह अल्लाह तआ़ला के इस" ومن يتولهم منكم فإنه **"कथन की व्याख्या में लिखते हैं:अल्ला तआ़ला ने इस आयत में यह उल्लेख किया है कि जो व्यक्ति यहूद एवं ईसाई से मित्रता रखता है वह उन से मित्रता रखने के कारण उन में से ही हो जाता है,एक अन्य स्थान पर बयान फरमाया कि उन से मित्रता रखने से अल्लाह का क्रोध और स्वेद की यातना अनिवार्य हो जाती है,और उन से मित्रता रखने वाला यदि मोमिन होता तो उन से मित्रत नहीं रखता।थोड़े हेर फेर के साथ कथन समाप्त हुआ।**

ऐ मोमिनो!यह कल्पना से परे बात है कि कोई मुसलमान किसी मुसलमान के विरुद्ध काफिर की सहायता करे,यह केवल

मोनाफिकों (द्विधावादियों) अथवा उन जैसा गुण रखने वाले लोग ही कर सकते हैं,जैसे रवाफिज़ और कुछ ऐसे लोग है जो काफिरों के देश में जा कर बस गए,उन के मध्य निवास कर गए और उन की सेना में कार्य करने लगे,ऐसे लोग मुसलमानों के विरुद्ध काफिरों के युध में भाग लेते है,क्योंकि उनके अनुसार यह उन की काम का तकाजा होता है,अल्लाह तआ़ला हमें इस से सुरक्षित रखे।[1]

अल्लाह के बंदो!मोमिनों से मित्रता रखने एवं कुफ्र एवं काफिरों से मुक्ति का इजहार करने की अनिवार्यता एवं इस्लामी आस्था में निष्ठा के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए यह एक लाभदायक प्राक्कथन है।

अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को क़ुर्आन की बरकत से लाभान्वित फरमाए,मुझे और आप को इसकी आयतों एवं नीतियों पर आधारित परामर्शों से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए

---

[1] इब्ने तैमिया रहि़महुल्लाह का कथन देखें:الفتاوى: (२८/५३०-५३१)।

क्षमा मांगता हूं,आप भी उस से क्षमा मांगें,नि:संदेह वह अति क्षमाशील कृपालु है।

द्वतीय उपदेश:

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده.

प्रशंसाओं के पश्चात!

अल्लाह के बंदो!आप अल्लाह का तक़्वा (धर्मनिष्ठा) अपनाएं और जान लें कि काफिरों से घृणा रखने का अर्थ यह नहीं है कि मामलों में उन पर अत्याचार किया जाए,अथवा यह कि उन के साथ खरीद-बेच,किराया एवं सुलह व अनुबंध आदि करना ह़राम (अवैध) है,यह एक चीज़ है और निष्ठा अन्य चीज़ है।मामलों में न्याय करना है और नैतिकता एवं व्यवहार को सुंदर रखना है,आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम काफिरों के साथ मामले किया करते थे जब कि आप उन से और उन के धर्म से घृणा रखते थे,किन्तु आप उन के साथ सुंदर व्यवहार करते थे, यद्यपि वह युध में बंदी ही क्यों न बनाए गए हों,अल्लाह तआ़ला के इस

आदश पर अ़मल करते हुए कि: (ويطعمون الطعام على حبه مسكينا ويتيما وأسيرا).

अर्थात:और भोजन कराते रहे उस (भोजन) को प्रेम करने के बावजूद , निर्धन तथा अनाथ और बंदी को।

आप यह भी जान लें कि अल्लाह तआ़ला ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

(إن اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تسليما)

अर्थात:अल्लाह तथा उस के फरिश्ते दरूद भेजते हैं नबी पर,हे ईमान वालो!उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।

اللهم صل وسلم على عبدك ورسولك محمد، وارض عن أصحابه الخلفاء، الأئمة الحنفاء، وارض عن التابعين ومن تبعهم بإحسان إلى يوم الدين.

हे अल्लाह!हमारे दिलों को निफाक (पाखंड) से,हमारे अ़मलों को दिखावे से और हमारी निगाहों को कदाचार से पवित्र कर दे।

हे अल्लाह!हम तुझ से दुनिया व आखिरत की समस्त भलाई की दुआ़ मांगते हैं जो हम को ज्ञात है और जो ज्ञात नहीं,और तेरा

शरण चाहते हैं दुनिया एवं आखिरत के समस्त पापों एवं कदाचारों से जो हम को ज्ञात हैं और ज्ञात नहीं हैं।

हे अल्लाह!हम तेरा शरण चाहते हैं तेरी उपकारों की समाप्ति से,तेरी सुख के हट जाने से,तेरी अचानक की यातना से और तेरी हर प्रकार की अप्रसन्नता से।

हे अल्लाह!हम तुझ से स्वर्ग मांगते हैं,और वे कार्य एवं कथन भी जो स्वर्ग से निकट कर दे,औ हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उन कार्यों एवं कथनों से भी जो नरक से निकट करे।

हे हमारे रब!हमें दुनिया में पुण्य दे और आखिरत में भालई प्रदान फरमा और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

اللهم صل على نبينا محمد وآله وصحبه وسلِّم تسليما كثيرا.

लेखक:

माजिद बिन सुलैमान अर्रसी

अनुवादक:

फैज़ुर रहमान हिफज़ुर रहमान तैमी